सावन में शिव की ही आराधना क्यों?

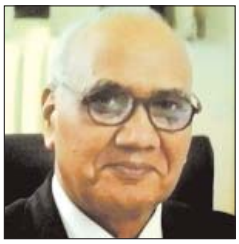

डॉ0 भरत राज सिंह

शिव ब्रह्माण्ड की शक्ति के द्योतक हैं। शिव लिंग काले पत्थर का ही होता है, जो वातावरण व ब्रह्माण्ड से ऊर्जा अवशोषित करता रहता है। इस ऊर्जा को पूर्ण रूप से शिवलिंग में समाहित करने के लिए इसको साफ सुथरा रखने व जल, दूध आदि से अभिषेक करने की प्रथा हैं, जिससे पूजा अर्चना के समय आप को उपयुक्त ऊर्जा प्राप्त हो और प्रदूषित ऊर्जा समाप्त हो जाए।

शास्त्रों में कहा गया है कि सावन का महीना भगवान शिव का महीना होता है, क्योंकि ऐसी मान्यता है कि इस महीने में भगवान विष्णु पाताल लोक में रहते हैं, इसी वजह से इस महीने में भगवान शिव ही पालनकर्ता होते हैं और वहीं भगवान विष्णु के भी कामों को देखते हैं, यानि सावन के महीने में त्रिदेवों की सारी शक्तियां भगवान शिव के पास ही होती हैं। शिव को देवों का देव महादेव कहा जाता है। वेदों में इन्हें रुद्र नाम से पुकारा गया है। अब आपको कुछ ऐसे काम बताते है, जिन्हे सावन में करने से भगवान शिव प्रसन्न हो जाते हैं–

सावन के महीने में शिवलिंग की पूजा की जाती है लिंग सृष्टि का आधार है और शिव विश्व कल्याण के देवता हैं। शिवलिंग से दक्षिण दिशा में ही बैठकर पूजन करने से मनोकामना पूर्ण होती है। शिवलिंग पूजा में दक्षिण दिशा में बैठकर करके साथ में भक्त को भस्म का त्रिपुण्ड लगाना चाहिए, रुद्राक्ष की माला पहननी चाहिए और बिना कटेफटे हुये बिल्वपत्र अर्पित करना चाहिए। शिवलिंग की कभी पूरी परिक्रमा नहीं करनी चाहिए। आधी परिक्रमा करना ही शुभ होता है।

शास्त्रों में, ब्रह्ममाण्ड की संरचना के द्योतक ब्रह्मा, कर्म के द्योतक विष्णु तथा शक्ति के द्योतक शिव के होने का जिक्र है। ब्रह्मा, विष्णु के पूरक के रूप में हमेशा ब्रह्ममाण्ड के कार्यों संचालन में सहयोग करते हैं तथा उनके साथ विद्यामान रहते हैं। ऐसी भी धारणा व्यक्त की गयी है कि सम्पूर्ण पृथ्वी शेषनाग पर टिकी हुयी है तथा भगवान विष्णु जी लेटे हुए अपनी शैया के रूप में शेषनाग का उपयोग करते हैं अर्थात सम्पूर्ण पृथ्वी का भार भगवान विष्णु के साथ शेषनाग द्वारा ही उठाया गया है। यदि हम उपरोक्त कथन को विज्ञान की कसौटी पर आंकलित करें तो सम्पूर्ण पृथ्वी पर जलाशय की मात्रा 70 प्रतिशत और जमीन की मात्रा 30 प्रतिशत है। इससे पृथ्वी को आसमान से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि सम्पूर्ण पृथ्वी का जमीनी हिस्सा समुद्री जलाशय के ऊपर ही टिका हुआ है, जिसे शास्त्रों में शेषनाग पर टिका हुआ बताया गया है।

भगवान विष्णु को जलाशय में शेषनाग

की शैया पर लेटे हुए होने से, हमें यह संदेशा मिलता है कि जल को संरक्षित करें व इसे किसी भी प्रकार की गंदगी व कचरे से प्रदूषित न करें क्योंकि जल व वायु समस्त जीवों के लिए जीवनदायनी है। यह भी वास्तविकता है कि समुद्री व अन्य जलाशयों के सतह से निरंतर वाष्पीकरण होता रहता है और वायुमण्डल में आद्रता भी निरंतर संतुलित रहती है। इसी से जलवायु संरक्षण व ऋतुओं का नियंत्रण भी बना रहता है। बरसात में पृथ्वी के जमीनी हिस्से में घने बादलों से बारिश होने से समुद्री सतह व जलाशयों में वाष्पीकरण की प्रक्रिया न्यूनतम हो जाती है। इसी कारण भगवान विष्णु को पाताल लोक में चले जाने व निवास करने का जिक्र शास्त्रों में किया गया है। वर्षा ऋतु में पृथ्वी के जमीनी हिस्सों में मौजूद तमाम गंदगी व कचरों की सफाई भी नाले व नदियों से समुद्र में पहुंच जाती है, जिसका बॉयलोजिकल प्रक्रिया से धीरे–धीरे शोधन हो जाता है। इसी कारण वर्षा ऋतु में भगवान विष्णु, जो पूज्य हैं, को पाताल लोक चले जाने का जिक्र है तथा शिव को श्रावण माह में त्रिदेव के रूप में माना जाता है और शिवलिंग की पूजा की जाती है।

शिव ब्रह्ममाण्ड की शक्ति के द्योतक हैं। शिव लिंग काले पत्थर का ही होता है, जो वातावरण व ब्रह्माण्ड से ऊर्जा अवशोषित करता रहता है। इस ऊर्जा को पूर्ण रूप से शिवलिंग में समाहित करने के लिए इसको साफ सुथरा रखने व जल, दूध आदि से अभिषेक करने की प्रथा हैं, जिससे पूजा अर्चना के समय आप को उपयुक्त ऊर्जा प्राप्त हो और प्रदूषित ऊर्जा समाप्त हो जाए। सावन का महीना ऐसा होता है जब बरसात के मौसम का एक माह से ज्यादा समय गुजर चुका होता है, उसके बाद मौसम में नमी व काफी सुहावनापन आ जाता है। बरसात के मौसम में शुरू के एक महीने में वातावरण में मौजूद विषाक्त गैसें धरती पर पानी के कणों के साथ आ जाती हैं और अक्सर स्त्रियों व बच्चों में त्वचा सम्बन्धी रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इन रोगों को दूर करने हेतु ही सावन में औरतों द्वारा शिवलिंग पर अभिषेक (जल, दूध, घी, शहद आदि) से किया जाता है जिससे त्वचा रोग के जर्म भी शिव लिंग में अवशेषित होकर उनके शरीर के बैक्टेरिया भी समाप्त हो जाते हैं और औरतें निरोगी हो जाती हैं तथा शिवलिंग से अच्छी ऊर्जा ग्रहण करती हैं।

सावन के महीने में शिव–पार्वती की पूजा–अर्चना से दांपत्य जीवन में प्रेम और तालमेल बढ़ता है। सम्पूर्ण वातावरण में पेड़–पौधों, खेतों, झाड़ियों व गार्डेन आदि में हरियाली आ जाती है, जिससे मनुष्यमात्र ही नहीं वरन जीव–जन्तुओं में भी प्रसन्नता बढ़ती है। सावन में औरतें समूह में झूला भी झूलती हैं और आपस में गायन करती हैं जिससे उनमें प्रसन्नता बढ़ती है।

(लेखक एसएमएस लखनऊ में निदेशक व वैदिक विज्ञान केन्द्र के प्रभारी हैं)

अभिषेक की विधि व फल

- दूध से शिवजी का अभिषेक करने पर परिवार में कलह, मानसिक अवसाद व अनचाहे दु:ख व कष्टों आदि का निवारण होता है।
- वंश वृद्धि के लिए घी की धारा डालते हुए शिव सहस्रनाम का पाठ करना चाहिए।
- इत्र की धारा डालते हुए शिव का अभिषेक करने से भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।
- जलधारा डालते हुए शिव जी का अभिषेक करने से मानसिक शान्ति मिलती है।
- शहद की धारा डालते हुए अभिषेक करने से रोग मुक्ति मिलती है। परिवार में बीमारियों का अधिक प्रकोप नहीं रहता है।
- गन्ने के रस की धारा डालते हुए अभिषेक करने से आर्थिक समृद्धि व परिवार में सुखद माहौल बना रहता है।
- शिव जी को गंगा की धारा बहुत प्रिय है। गंगा जल से अभिषेक करने पर चारों पुरुषार्थ की प्राप्ति होती है। अभिषेक करते समय महामृत्युंजय का जाप करने से फल की प्राप्ति कई गुना अधिक हो जाती है। ऐसा करने से माँ लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं।
- सरसों के तेल की धारा डालते हुये अभिषेक करने से शत्रुओं का शमन होता है, रुके हुये काम बनने लगते है व मानसम्मान में वृद्धि होती है–

पुष्पपत्र अर्पण विधि व फल

- बिल्वपत्र चढ़ाने से जन्मान्तर के पापों व रोग से मुक्ति मिलती है।
- कमल पुष्प चढ़ाने से शान्ति व धन की प्राप्ति होती है।
- कुशा चढ़ाने से मुक्ति की प्राप्ति होती है।
- दूर्वा चढ़ाने से आयु में वृद्धि होती है।
- धतूरा अर्पित करने से पुत्र रत्न की प्राप्ति का पुत्र का सुख मिलता है।
- कनेर का पुष्प चढ़ाने से परिवार में कलह व रोग से निवृत्ति मिलती हैं।
- शमी पत्र चढ़ाने से पापों व शत्रुओं का नाश व भूतप्रेत बाधा से मुक्ति मिलती है।

शिवलिंग पूजा में वर्जित

- कुंवारी लड़कियों को शिवलिंग पर जल नहीं चढ़ाना चाहिए।
- शिवलिंग पर कभी केतकी के फूल अर्पित नहीं करने चाहिए क्योंकि ब्रह्मदेव के झूठ में उनका साथ देने की वजह से शिव ने केतकी के फूलों को श्राप दिया था।
- तुलसी पत्तों को शिवलिंग पर नही चढ़ना चाहिए, क्योंकि शिव द्वारा तुलसी के पति जरासंध का वध हुआ था।
- नारियल तो ठीक है लेकिन शिवलिंग पर नारियल के पानी से अभिषेक नहीं करना चाहिए।
- हल्दी का सम्बन्ध स्त्री सुन्दरता से है, इसलिए शिवलिंग पर हल्दी नहीं चढ़ानी चाहिए।
- भगवान शिव विनाशक हैं और सिंदूर जीवन का संकेत। इस वजह से शिव पूजा में सिंदूर उपयोग नहीं होता।